



SHRI RISINGBOR KURKALANG

Shri Risingbor Kurkalang is widely recognised as a master craftsman in traditional instrument making and is an accomplished folk musician as well.

2. Born on the 19th November, 1978 into a family of farmers at Laitkyrhong village, East Khasi Hills district of Meghalaya, Shri Risingbor developed a passion for traditional music and drew inspiration from his grandfather. He began making different traditional instruments and mastered playing all of them. He started to manufacture the traditional music instruments for sale in the year 2001. He is the first person from his village who manufacture these instruments.

3. Shri Risingbor was invited by a group of traditional musicians in 1990 at his village to record at All India Radio and Doordarshan Kendra under their programs dedicated to traditional music. This boosted his career as a musician and a music craftsman. He has travelled extensively around the state and the country to showcase his talent as a musician and music craftsman as well as a champion in preserving the Khasi traditional folk music and dance. His instruments are all handmade and with a sense of understanding for the quality of sound and form.

4. Shri Risingbor participated in several exhibitions and workshops including the workshop on traditional music/ traditional musical instrument making organised by the Government of Meghalaya. He participated in the Vadya Darshan organized by the Sangeet Natak Akademi, New Delhi in the year 2002 and also participated in 2nd Thoh Shun International Art Camp 2006 held at Cherrapunjee (Sohra), East Khasi Hills District, Meghalaya. He has performed in the International Festival on Inter- Cultural Dialogue between North East India & South East Asia (2010). He composed and played the song entitled 'Mei Mariang' from an album titled 'Sai-thain ki Sur' by the Khasi-Cymru collective which was released in 2021 on Naxos World. He was invited by Mr. Gareth Bonello, a Welsh musician from Wales, United Kingdom to perform with him at the Rajasthan International Folk Festival (RIFF) at Jodhpur (2022).

5. Shri Risingbor was awarded a Certificate of appreciation for his participation in the workshop on the making of the traditional musical instruments organised by the Government of Meghalaya (2008). He has received INTACH's Martand Singh Memorial Award 2021, a cash award in the Handicraft Category amounting to Rs. 1 lakh (Rs. one lakh) from Indian National Trust for Art and Cultural Heritage (INTACH), New Delhi.



श्री रिसिंगबोर कुरकालंग

श्री रिसिंगबोर कुरकालंग पारंपरिक वाद्ययंत्र के कुशल शिल्पकार के रूप में सुविख्यात हैं और वह पारंगत लोक संगीतकार भी हैं।

2. 19 नवंबर, 1978 को मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स जिले के लैतकिरहोंग गांव के किसान परिवार में जन्मे, श्री रिसिंगबोर ने पारंपरिक संगीत के प्रति गहरी रुच व्यक्त की और अपने दादा से प्रेरणा ग्रहण की। उन्होंने विभिन्न पारंपरिक वाद्ययंत्र बनाने शुरू किए और उन सभी को बजाने में महारत हासिल की। उन्होंने वर्ष 2001 में बिक्री के लिए पारंपरिक वाद्ययंत्रों का निर्माण शुरू किया। वह इन वाद्ययंत्रों का निर्माण करने वाले अपने गांव के पहले व्यक्ति हैं।

3. श्री रिसिंगबोर को, 1990 में उनके गांव के पारंपरिक संगीतकारों के एक समूह द्वारा आकाशवाणी और दूरदर्शन केंद्र में पारंपरिक संगीत पर आधारित कार्यक्रम रिकॉर्ड करने के लिए आमंत्रित किया गया था। इसने एक संगीतकार और वाद्ययंत्र शिल्पकार के रूप में उनके करियर को बढ़ावा दिया। उन्होंने एक संगीतकार और वाद्ययंत्र शिल्पकार के रूप में अपनी प्रतिभा दिखाने और खासी पारंपरिक लोक संगीत और नृत्य के संरक्षण के पैरोकार के तौर पर पूरे राज्य और देश की प्रचुर यात्राएं की हैं। उनके सभी वाद्ययंत्र हस्तनिर्मित हैं और उनमें ध्वनि और बनावट की गुणवत्ता की समझ मिली होती है।

4. श्री रिसिंगबोर ने मेघालय सरकार द्वारा आयोजित पारंपरिक संगीत/वाद्ययंत्र निर्माण पर कार्यशाला सहित कई प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं में भाग लिया। उन्होंने वर्ष 2002 में संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित वाद्य दर्शन में भाग लिया और चेरापूंजी (सोहरा), पूर्वी खासी हिल्स जिला, मेघालय में आयोजित दूसरे थोह शुन अंतरराष्ट्रीय कला शिविर 2006 में भी भाग लिया। उन्होंने उत्तर-पूर्व भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया (2010) के बीच अंतर-सांस्कृतिक संवाद पर अंतरराष्ट्रीय महोत्सव में प्रदर्शन किया है। उन्होंने खासी-सिमरु कलेक्टिव द्वारा 'साईं-थाइन की सुर' नामक एल्बम में 'मेई मारियांग' नामक गीत को संगीतबद्ध किया और वादन किया, इस एल्बम को 2021 में नेक्सोस वर्ल्ड पर रिलीज़ किया गया था। उन्हें वेल्स, यूनाइटेड किंगडम के एक वेल्श संगीतकार श्री गैरेथ बोनेलो द्वारा जोधपुर में राजस्थान अंतरराष्ट्रीय लोक महोत्सव (2022) में अपने साथ संगीत प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया था।

5. श्री रिसिंगबोर को मेघालय सरकार द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद्ययंत्रों के निर्माण पर कार्यशाला (2008) में भाग लेने के लिए प्रशंसापत्र प्रदान किया गया। उन्हें हस्तशिल्प श्रेणी में इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज (इंटेक), नई दिल्ली का एक लाख रुपये वाला मार्तण्ड सिंह स्मृति नकद पुरस्कार 2021 प्राप्त हुआ है।